तीसरी जाति

(2:11-18)

कैंट ह्यूगस ने जॉन रीड नामक एक व्यज़ि की कहानी सुनाई, जो ऑस्ट्रेलिया में एक बस चलाता था। बस में गोरे और आदिवासी सब लोग होते थे। लड़के शोर मचाते और झगड़ते रहते थे। अंतत: झगड़े की बातें सुनकर जॉन उन लड़कों के बीच में आ गया। उसने बस सड़क के एक ओर खड़ी की और गोरे लड़कों से कहा, ''तुज़्हारा रंग ज़्या है ?''

''गोरा।''

जॉन ने कहा, ''नहीं, तुम हरे हो। बस पर सवार सब लड़कों का रंग हरा है। अब बताओ, तुज़्हारा रंग ज़्या है ?''

गोरे लड़कों ने उज़र दिया, ''हरा।''

फिर उसने आदिवासी लड़कों से कहा, ''तुज़्हारा रंग ज़्या है ?''

''काला,'' उन्होंने कहा।

''नहीं, तुज़्हारा रंग हरा है। इस बस में सब हरे रंग के लड़के हैं। अब बताओ, तुज़्हारा रंग ज़्या है ?''

आदिवासियों ने उज़र दिया, ''हरा।''

इससे कुछ समय के लिए वह झगड़ा और शोर बंद हो गया। कई मील आगे जाने पर एक लड़के ने दूसरों से कहा, ''ठीक है, हल्के हरे रंग के बस के इस ओर, और गहरे हरे रंग के उस ओर हैं।'' फिर उसे लेकर फुसफुसाहट शुरू हो गई।

अंत में इसका हल तो नहीं निकला, परन्तु बस ड्राइवर को समझ आ गया कि ज़्या करना है। उस बस में एक नई जाति की आवश्यकता थी, जो बिना किसी रंग अर्थात काले-गोरे के सवाल के केवल हरे रंग के लोग हों।[1] एक रहने के लिए लोगों में भिन्नता नहीं होनी चाहिए।

इफिसियों के नाम पौलुस की पत्री एक नई जाति की सृष्टि के बारे में बताती है। यह बताती है कि यीशु इस संसार में एक नई जाति बनाने के लिए आया।

पौलुस द्वारा इफिसियों की पुस्तक लिखे जाने के कई वर्ष बाद दूसरी सदी के सिकन्द्रिया के ज़्लेमैंट नामक एक मसीही ने अपने लेखों में इस जाति की बात की: ''परमेश्वर की आराधना एक नए ढंग से करने वाले, हम तीसरी जाति अर्थात मसीही हैं।''[2]

मसीही लोग तीसरी जाति हैं। हम परमेश्वर का नया समुदाय अर्थात परमेश्वर का नया समाज हैं।

इस कारण स्मरण करो, कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो, (और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं) तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे। पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। ज़्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। और उस ने आकर तुज़्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। ज़्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है (2:11-18)।

इस पद की मूल पुष्टि को एक वाज़्य में संक्षिप्त करना हो तो इस प्रकार किया जा सकता है: *यीशु मसीही लोगों को समझाना चाहता है कि वे लोगों की एक नई जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं।*

अपने अतीत को याद करके हम नई जाति के महत्व में बढ़ते हैं

एक नई जाति पर इस बातचीत पर हमें इतना उज़ेजित ज़्यों होना चाहिए? इसका उज़र आयत 11 और 12 में मिलता है। नई जाति के लिए हमारी प्रशंसा पुराने जीवन का स्मरण करके बढ़ती है। एक शज़्द में उस जीवन का चित्रण होता है और वह शज़्द है विदेशी। पुराने जीवन में हम परमेश्वर से अलग और उसके लोगों से अलग थे।

ऐसा नहीं है कि यह संसार एक-के लिए-सब-और-सब-के लिए-एक नहीं है, या है? इस संसार के लोग प्रेम से नहीं रहते है। देशों में तनाव पाया जाता है। बड़े शहरों में गुंडे मवाली अपने इलाके बांट लेते हैं और वहां किसी दूसरे के आने पर उसकी हत्या कर देते हैं। हमारे घरों में, लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं। तलाक दर में वृद्धि इसका प्रमाण है। यहां तक कि कलीसिया में भी, रेखाएं खींची जाती हैं और कुछ लोगों को दूसरों से अलग कर दिया जाता है। अलग किया जाना हमारे संसार की पहचान है।

पौलुस ने इस समस्या की ओर ध्यान दिलाया। मसीहियत लोगों के एक दूसरे से मिलकर, प्रेम से न रह पाने के मुद्दे को टालती नहीं है। वास्तव में, पौलुस ने मसीहियत को इस समस्या से जूझते हुए देखा। पौलुस के समय के संसार में, लोगों के दो समूह पूरी तरह एक दूसरे से अलग थे जिन्हें यहूदी और अन्यजाति का नाम दिया गया था। यहूदी लोग अन्यजातियों को ''खतनारहित'' कहते थे। यह नाम उन्होंने पूरी जाति का मज़ाक व ठट्ठे के लिए रखा था। कहते हैं कि यह पूछे जाने पर कि परमेश्वर ने इतनी अन्यजातियों को ज़्यों बनाया, एक प्रसिद्ध यहूदी धर्मगुरु ने जवाब दिया, ''ताकि गेहन्ना [अर्थात नरक] की आग

जलाने के लिए पर्याप्त ईंधन मिल जाए।''[3]

इन दोनों में शत्रुता इतनी अधिक थी कि एक यहूदी व्यक्ति के लिए जन्म दे रहे किसी अन्यजाति की सहायता करके संसार में एक और अन्यजाति को लाने में सहायता करना अवैध था। यहूदी द्वारा किसी अन्यजाति से विवाह करना यहूदी परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु की तरह माना जाता था और उसका परिवार उसका अंतिम संस्कार कर देता था। यदि कोई यहूदी पलिश्तीन में चला जाता था, तो उसे अपने पांव की मिट्टी झाड़नी होती थी ताकि अन्यजातियों की धूल पवित्र भूमि को दूषित न कर सके। अन्यजातियों के प्रति यहूदियों की घृणा इतनी अधिक थी। अन्यजातियों के मन में भी यहूदियों के प्रति ऐसी ही भावना थी, वे भी यहूदियों को तुच्छ जानते थे।

पौलुस ने मसीही लोगों के लिए लिखा, जो पहले अन्यजाति थे, जिन्हें बचपन से मालूम था कि यहूदी लोग उन्हें तुच्छ मानते हैं और जो हर यहूदी की नज़र में घृणित थे। पौलुस ने यह पत्री भेजी ताकि अन्यजाति मसीहियों को पता चल जाए कि वे उस नई जाति के भाग बन गए हैं, जो यहूदियों और अन्यजातियों में से बनी है। इस नई जाति में सब प्रकार की जातीय घृणा, नापसन्दगी और दुर्व्यवहार खत्म हो जाना था।

इफिसियों 2:11, 12 मानवीय जीवों तथा परमेश्वर के बीच अलगाव के खत्म होने की ही बात करता है। आयत 12 में वह अन्यजातियों के परमेश्वर से अलग होने की पांच बातें बताता है।

1. *''... तुम ... मसीह से अलग ... थे।''* अन्यजातियों को पता नहीं था कि मानवीय इतिहास को यीशु मसीह में अपना अर्थ और उद्देश्य मिल गया था।

2. *''... तुम इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए ... थे।''* अन्यजातियों को यहूदियों की तरह इब्राहीम की संतान होने के अधिकार स्वाभाविक तौर पर नहीं मिलते।

3. *''तुम ... प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे।''* वे बाहर से अन्दर को देख रहे हैं।

4. *''तुम ... आशाहीन ... थे।''* उन्हें कोई आशा नहीं थी ज़्योंकि उनके पास मसीह नहीं था।

5. *''तुम ... ईश्वररहित थे।''* वे परमेश्वर को नहीं जानते थे। उसके साथ उनका कोई वास्तविक सज़्बन्ध नहीं है।

ग्लैन ओवैन का रशिया जाना एक अद्‌भुत अनुभव था। उन्होंने कीव नामक स्थान में एक स्त्री से मिलने की बात बताई। उस स्त्री के हाथों में एक बाइबल थी और वह ग्लैन से कहने लगी, ''मेरे हाथों में संसार की आशा है।''उसने उसकी बात का जवाब यह कहकर दिया।''

> ... मुझे उसे देखकर घुटन हुई। ... उसके स्वर में उदासी थी, उसकी आंखों में उदासी थी, उसके मन में भी उदासी थी। परन्तु इस सुन्दर महिला में आशा थी। उसके टूटे हुए मन में आशा की लपट थी, जो उन्हीं लोगों में जलती है जो परमेश्वर के लिए अपना मन खुला रखते हैं। प्यार से बाइबल को चूमते हुए, उसे

मालूम था कि उसकी आशा का आधार है। ...

जब उसने अपनी कहानी बताई तो उसकी पीड़ा के बारे में सुनकर हमारे भी आंसू निकल गए। केवल अठारह माह पहले ही चरनोबिल न्यूज़्लियर दुर्घटना से रेडिएशन के ज़हर से उसका इकलौता बेटा मर गया था। केवल तीन माह पहले दवाई न मिलने के कारण उसके पति की मृत्यु हो गई थी। अब सांत्वना और आशा की खोज में वह आई थी।

... यह भली और शांत यूक्रेनी महिला जानती थी कि उसकी आशा यीशु मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र में है। सरकार से उसे कुछ नहीं मिला था। कुछ अर्थ में जीवन से उसे कुछ नहीं मिला था। जो लोग उसे बहुत प्रिय थे वे मर गए थे। अकेले हो जाने के कारण, इसका कोई सहारा नहीं रहा था। उसके लिए उज़्मीद रखने का यीशु के अलावा कोई कारण नहीं था। हम में से किसी के लिए भी वही एकमात्र आशा है।[4]

यीशु के बिना हम सब आशाहीन थे, परन्तु यीशु ने हमारे जीवनों को बदल दिया है। वह किसी भी व्यज़्ति को जो उसकी ओर मुड़ता है, यही आशा देने की पेशकश करता है। जब आप हैरान होते हैं, ''ज़्या फायदा है ?''–जब लगता है कि जीवन में कुछ नहीं रहा तब यीशु आकर बड़े प्रेम से सब कुछ बदल देता है।

ध्यान दें कि आयत 13 में पौलुस ने इस बात की पुष्टि इस प्रकार की है: ''पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।'' ध्यान दें कि यह आयत ज़्या कहती है, ज़्योंकि ''मसीह यीशु में'' तो सब कुछ बदल जाता है। ''मसीह यीशु में'' एक नई जाति की उत्पज़ि होती है। यह लोगों का एक ऐसा समुदाय है जिसका अस्तित्व ''मसीह के लहू के द्वारा'' हुआ है।

यह सोच कर कि हमारे जीवन उस अन्तर के बिना, जो यीशु हम में लेकर आया है, हम सबको परमेश्वर का धन्यवाद और उसकी स्तुति करनी चाहिए जिसने हमें आशा देने के लिए यीशु को बलिदान बनाया। अपने पिछले जीवनों को स्मरण करके हमें नई जाति के महत्व की समझ आने लगती है।

नई जाति में भागीदारी देने के लिए हम प्रभु के ऋणी हैं

हम नई जाति में यीशु के सामने पूरी तरह से, सज़्पूर्ण तौर पर यीशु के ऋणी हैं। केवल उसी के कारण यह नई जाति बन पाई है। यीशु ने यह कैसे किया ? आयत 15 और 16 में क्रियाओं की समीक्षा करें।

यीशु ने ''अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, *मिटा* '' कर तीसरी जाति बनाई। यीशु ने यहूदी धर्म से छुटकारा दिलाया।

यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग मसीहियत ही है। उसने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। पतरस ने कहा, ''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; ज़्योंकि स्वर्ग

के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)।

यीशु धर्म के आधार पर दूसरों से अलगाव या दूरी को मिटाने के लिए नहीं बल्कि धार्मिक फूट को खत्म करने के लिए मरा।

ध्यान दें कि यीशु ने और ज़्या किया। आयत 15 के दूसरे भाग के अनुसार, ''कि दोनों से अपने में एक नया मुनष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।'' उसने किसी चीज़ को मिटाया ही नहीं, बल्कि किसी को बनाया भी। यीशु ने ज़्या बनाना चाहा था? वह अपने में *एक नया मनुष्य* बनाने के लिए आया। ''नया'' शज़्द महत्वपूर्ण है। दो यूनानी शज़्दों का अनुवाद ''नया'' हुआ है। *Neos* का अर्थ समय में ''नया'' है। हाल ही में अस्तित्व में आई किसी वस्तु को नया कहते हैं। दूसरे यूनानी शज़्द, *kainos* का अर्थ गुण में ''नया'' होना है। कोई वस्तु इस अर्थ में नई होती है यदि उसे यहां तक बदला गया हो या उसमें कोई ऐसा सुधार किया हो जिससे यह बिल्कुल अलग लगे।[5]

आयत 15 में पौलुस ने ''नया'' के लिए इस दूसरे शज़्द का इस्तेमाल किया। वह मसीही लोगों को अहसास दिलाना चाहता था कि यीशु एक ''नया मनुष्य'' बनाने के लिए अर्थात एक नई जाति या मानवीय अस्तित्व का गुण बनाने के लिए आया।

आयत 16 हमें यीशु के साथ जुड़ा तीसरा क्रिया शज़्द देती है। यह हमें बताती है कि ''एक नया मनुष्य'' बनाने का यीशु का ज़्या उद्देश्य था। पौलुस ने कहा कि यह ''क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से'' मिलाने के लिए था।

यह मिलान यीशु ने क्रूस पर किया। उसने तीसरी जाति अर्थात नये मनुष्यत्व को एक देह में परमेश्वर के साथ मिला दिया। उसने परमेश्वर और मनुष्य के सज़्बन्ध को फिर से बहाल कर दिया। यीशु ने मनुष्यों का मनुष्यों के साथ सज़्बन्ध भी सुधार दिया।

रॉबर्ट लुईस स्टीवनसन ने एक कमरे में रहने वाली दो अविवाहित बहनों की कहानी बताई। अंत में, उस तंग कमरे में जगह की कमी के कारण दोनों में झगड़ा शुरू हो गया। एक दिन उनकी बहस धर्म के विषय पर बहुत तेज़ हो गई। एक दूसरे के प्रति उनका क्रोध इतना बढ़ गया कि उन्होंने एक दूसरे से खूब गाली गलौज किया, जिस कारण उस झगड़े के बाद उनकी बोल चाल बंद हो गई।

दिन महीनों में बदलते गए। वे एक दूसरे से बिल्कुल बात नहीं करती थीं। उन में से न किसी के पास इतने पैसे ही थे कि कोई दूसरा कमरा किराए पर लेकर उसमें रहने लगे, सो वे उसी कमरे में रहते हुए भी आपस में बात नहीं करती थीं। उन्होंने अपना-अपना इलाका बांटने के लिए कमरे में लकीर खींच दी। कई साल तक वे एक दूसरे से घृणा करती रहीं और उन्होंने कभी एक दूसरे से बात नहीं की। रात को दोनों जो एक दूसरे की शत्रु बन गई थीं, एक दूसरे को खर्राटों की आवाज सुननी पड़ती। उनका बाकी जीवन बड़ी दयनीय स्थिति में गुज़रा।

ऐसा केवल किताबों में ही नहीं बल्कि वास्तविक जीवन में भी होता है। मैंने मण्डलियों में ऐसा होते देखा है। हो सकता है कि हम फर्श पर लकीर तो न खींचते हों, परन्तु रेखाएं अवश्य खींची होती हैं। मसीह का नाम पहने लोगों का एक दूसरे के साथ

बिल्कुल सज़्बन्ध नहीं होता। दूसरों से अधिक आत्मिक होने की भावना बनी रहती है।

परमेश्वर के वचन के अधिकार के आधार पर मैं आपको बता सकता हूं कि जब मसीह की देह में झगड़ा या अलगाव या फूट आ जाती है, तो यह उस सबके विरुद्ध है जिसके लिए यीशु ने अपना प्राण दिया। यीशु एकमात्र, नई, एक मनुष्यजाति का सृजन करने के लिए अर्थात मिलाने के लिए आया था।

सारांश

यीशु के बाहर मनुष्य जाति उलझन में है। संध्याकाल के समाचार, प्रात:काल का समाचार पत्र और निजी अनुभव से ही यह पता चल जाता है कि हमारा संसार अलगाव, दूरी और शत्रुता में दक्ष है। बिना यीशु के संसार का ''हर व्यज़्ति-अपने-लिए'' ही जीता है।

इसके बिल्कुल विपरीत, कलीसिया शांति पाने का स्थान होनी चाहिए। मसीह अपनी कलीसिया से टूटे सज़्बन्धों को सुधारने के लिए, स्वीकार किए जाने के स्थान के लिए, मिलाप का स्थान बनने के लिए और एक नई जाति का प्रतिनिधित्व करने के लिए बुलाता है।

इसे प्राप्त करने के लिए, हमें कुछ बातों पर गंभीरतापूर्वक सोचने की आवश्यकता है। *जब तक हम यह नहीं समझते कि यीशु के लिए इस नई जाति का ज़्या महत्व है, तब तक हम मसीहियत को बिल्कुल नहीं समझ पाएंगे।* मसीह की देह वहीं है, जहां मसीहियत है।

यदि हम स्थानीय कलीसिया में रुकावटों के आने में कोई समस्या नहीं देख सकते तो हम मसीहियत को नहीं समझ सकते। स्थानीय कलीसिया के लिए ऐसा स्थान होना आवश्यक है जहां सब लोग लकीरें मिटाने के लिए काम कर सकें। प्रभु की कलीसिया की मण्डली के लिए लोगों को स्वीकार करना, उन्हें गले लगाना और उनसे प्रेम करना आवश्यक है। कलीसिया में हर एक को ऐसा अनुभव होना चाहिए, जो कलीसिया के बाहर नहीं हो सकता अर्थात एक नई जाति को, जिसका विश्वास है कि एक जगह है जो सबके लिए और सबकी है।

टिप्पणी

[1]कैंट ह्यूगस, *इफिसियंस: द मिस्ट्री ऑफ़ द बॉडी ऑफ़ क्राइस्ट* (व्हीटन, इलिनोइस: क्रॉसवे बुज़्स, 1990), 92-93. [2]ज़्लेमैंट ऑफ अलग्जैंड्रिया, ह्यूगस, 93 में उद्धृत। [3]बॉब हैंडरसन, *चोज़न फॉर रिचस: ए लाइफ-रिलेटड एज़्सपोज़िशन ऑफ़ इफिसियंस* (ऑस्टिन, टैज़्सस: जरनी बुज़्स, 1978), 49. [4]ग्लैन ओवैन, ''अनडाइंग स्पिरिट ऑफ़ होप,'' *अपरीच मैगज़ीन* (जनवरी-मार्च 1994), 3. [5]*Kainos* ''उस नया का अर्थ देता है जो प्रयुज़्त है, समय, या हाल का 'नया' नहीं; बल्कि उससे जो पुराने के रूप में भिन्न है अलग प्रकृति का 'नया' रूप या गुण है।'' *Neos* ''समय के सज़्बन्ध में 'नया' होने का संकेत देता है अर्थात जो हाल ही का है; इसे young के लिए इस्तेमाल किया जाता है और ऐसे ही विशेषकर 'young' की तुलनात्मक डिग्री में वह गुण या स्वभाव में पुराने का ही प्रजनन हो सकता है। *Neos* और *kainos* का इस्तेमाल कभी-कभी एक ही तरह होता है, परन्तु जैसा कि पहले ही संकेत दिया गया है, दो में अन्तर तो है, इस कारण इफि. 2:15 में 'नया मनुष्य' (*kainos*) स्वभाव को अलग दिखाने में 'नया' है; ...परन्तु कुलु. 3:10 में 'नया मनुष्यत्व' (*neos*) विश्वासी के 'नये' अनुभव के तथ्य पर जो हाल ही में आरज़्भ हुआ और अभी चल रहा है, ज़ोर देता है।'' डज़्ल्यू. ई. वाइन, मेरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, *''न्यू'' वाइन 'स एज़्सपोज़िटरी डिज़्शनरी ऑफ़ बिबलीकल वर्ड्स* (नैशविले, टैनिसी: थॉमस नैल्सन पज़्लिशिंग, 1985), 430-31.